IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 5, May 2022

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 5, May 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1105377|

वर्तमान संदर्भों मे आतंकवाद इसके प्रमुख कारण एवं दुष्परिणाम

डॉ. मनोज कुमार

प्राचार्य

सरस्वती कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तारानगर–(चूरू), राजस्थान

सारांश :

यद्यपि वर्तमान संदर्भों मे देखा जाए तो आतंकवाद वैश्विक स्तर की एक ज्वलंत समस्या के रूप मे खड़ा है तथापि इस विश्वव्यापी समस्या का समय रहते समुचित समाधान आज के समय की महती आवश्यकता भी है । आंकड़ो पर दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है की ना केवल भारतीय उप महाद्वीप मे अपितु विश्व के अन्य विभिन्न विकासशील देशों मे भी यह समस्या गत वर्षों की तुलना मे बढ़ी ही है । इसी संदर्भ मे यदी आतंकवाद की उत्पत्ति एवं इसके विस्तारित होने के पीछे के प्रमुख कारणो का अवलोकन करे तो इस संदर्भ मे भी पर्याप्त मतैक्य पाया जाता है। एक तरफ अशिक्षा को आतंकवाद के बढ़ने के प्रमुख कारण के रूप मे देखा जाता है वही समाजशास्त्रीय दृष्टि से आतंकवाद का जन्म प्रवृत्ति की अनियमित स्थिति के चलते होता है। प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से वर्तमान संदर्भों में आतंकवाद जैसी गंभीर समस्या का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है, एवं साथ ही आतंकवाद का मनोविज्ञान एवं उसका वैश्विक, राजनीतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्यन में आतंकवाद विभिन्न कारणो का विस्तृत विश्लेषण करने का प्रयास भी किया गया है।

मूल बिंदु : हिंसात्माक आतंकवाद, वैश्विक आतंकवाद, समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 5, May 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1105377|

प्रस्तावना :

दरअसल विगत शताब्दी में आतंकवादी घटनाओं, परिघटनाओं की तकनीकी में बहुआयामी परिवर्तन हुआ है। आधुनिक प्रौद्योगिकी उन्नाति व विस्तार ने आंतकवादियों को नई गतिशीलता और मारक क्षमता प्रदान की है। सभी प्रकार के राजनीतिक आंदोलनए चाहे उनका राजनीतिक अभिप्राय कुछ भी होए उन्होंने सर्वप्रथम इसी प्रकार की रणनीति का प्रयोग करना आरंभ किया। महान राजनीतिक चिंतक अडोल्फ हिटलर के अधीन नाजी जर्मनी व स्टालिन के अधीन सोवियत संघ के सर्वाधिकार शासन ने अपनी राज्य नीति के रूप में वास्तविक आतंकवाद को ही प्रत्यअक्ष अथवा परोक्ष रूप में अपनाया था। हालांकि वे इसे सार्वजनिक रूप से कभी स्वीकार नहीं करते थे। उन राज्यों में यातनाए प्रताड़ना और प्राणदंड जैसी तकनीकें किसी कानून प्रतिबंधों के बिना अपनाई जाती थीं ताकि लोग भयवश उनकी नीतियों और विचारधाराओं का पालन एवं निर्वहन करें। उल्लेनखनीय है कि स्टीलिन की तुलना में माओ ने आतंक का साम्राज्य अधिक व्यानप रूप से फैलाया। ईरान ने भी खुमैनी के शासन काल के दौरान अधिकतर हिंसक घटनाओं को झेला था जो प्रायः वामपंथियों व राज्यों द्वारा आयोजित की जाती थीं। अधिकांश लोगों का मानना है कि उपेक्षित उत्पीड़ित और वंचित लोगों द्वारा न्याय पाने की सामूहिक कार्यवाही ही आतंकवाद है। और इस प्रक्रिया में वे हिंसा का आश्रय लेते हैं। परंतु कतिपय संदर्भों में राज्य प्रत्यकक्ष या अप्रत्यहक्ष रूप से आतंकवाद का समर्थन नहीं करता है अपितु प्रोत्साहन भी देता है। ऐसे में आतंकवादियों का संगठित समूह भी राज्यत्तर अभिकर्त्ता के रूप में कार्य करता है। इस आलोक में केग्जैली और विट्टकॉफ जैसे विद्वानों की पूर्ण मान्यता है कि राज्य आतंकवाद को किसी भी उद्देश्य के मूल्यांकन में शामिल किया जाना चाहिएए क्योंकि हिंसात्माक आतंकवाद के कुछ सर्वाधिक निष्ठुर कार्य राज्य द्वारा उनके विरूद्ध किए जाते हैं जो उनका विरोध करते हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से आतंकवाद का जन्म मानस की शून्याता से होता है। अर्थशास्त्रीय रूप से आतंकवाद का जन्म सापेक्षिक वंचितवाद की अनुभूति से होता है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 5, May 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1105377|

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित है–

- आतंकवाद को परिभाषित करना।
- वर्तमान संदर्भों में आतंकवाद के प्रमुख कारणों को विश्लेषित करना।
- विभिन्न देशों में आतंकवाद के बढ़ते स्तर के पीछे के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना।
- आतंकवाद को रोकने हेतु समुचित उपायों को सुझाना।

आंकड़ो के स्त्रोत :

प्रस्तुत शोध–पत्र पूर्ण रूप से द्वितीयक आंकड़ो की सहायता लेकर तैयार किया गया है। शोध पत्र को तैयार करने में आंकड़ो का संकलन विभिन्न उपलब्ध साहित्यों से किया गया है साथ ही विभिन्न प्रकार नवीन आंकड़ो के संग्रहण हेतु विभिन्न ऑनलाइन स्रोतों से सहायता ली गयी है।

साहित्य पुनरावलोकन :

इस विषय से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्यों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

1. **वी. टी. पाटिल, न्यू फेस ऑफ टेर्ररिज्म, लांसर पब्लिकेशन, दिल्ली, 2008** – इस पुस्तक में नवीन आतंकवाद का चेहरा दिखाया गया है कि किस प्रकार आज के वर्तमान युग में आतंकवाद सभी क्षेत्रों में उपस्थित है। इसके अलावा पुस्तक में आतंकवाद के प्रकार तथा उसकी परिभाषाओं का वर्णन किया गया है। जिसमें मुख्य रूप से पश्चिम एशिया के संकट का वर्णन किया गया है तथा वहां सक्रिय प्रमुख आतंककारी संगठनों का भी उल्लेख किया गया है साथ ही भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका की प्रमुख आतंककारी घटनाओं, धार्मिक आतंकवाद, लोकतंत्र और आतंककारियों की मनोवैज्ञानिक सोच का वर्णन है कि क्यों वो इन घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं?
2. **वाल्डर लॉकर, दि न्यू टेर्ररिज्म : फेनेटीसिज्म एंड दि आर्म्स ऑफ मास डेस्ट्रक्शन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000** – इस पुस्तक के माध्यम से आतंकवाद का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के अलावा आतंकवादियों के व्यवहार को समझने का तर्कसंगत आधार भी उपलब्ध कराया गया है। लॉकर इसके माध्यम से रासायनिक व जैविक

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 5, May 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1105377|

हथियारों की उपलब्धता व भविष्य में होने वाली हानियों की तरफ ध्यान दिलाते हुए उस विनाशकारी ताण्डव से हमें सचेत करते प्रतीत होते हैं। इस पुस्तक में मार्क्स, मोहम्मद की विचारधारा, धर्म व राज्य के अर्न्तसंबंधों, आतंकवादियाके प्रेरणास्रोतों के बारे में विस्तार से बताया गया है। इसकी रचना का उद्देश्य भविष्य में हथियारों से बढ़ने वाली परेशानियों के प्रति हमारे भीतर दूरदृष्टि से युक्त विचारों की सृष्टि करना है। इसमें भाषा शैली को आशावादी दृष्टिकोण से युक्त किया गया है।

3. **रेंडी बोरम, साइकोलोजी ऑफ टेर्ररिज्म, साउथ फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004-** इस पुस्तक में आतंकवादी हिंसा को मनोवैज्ञानिक रूप से समझने का प्रयास किया गया है कि आखिर क्यों लोग इन आतंकवादी समूहों की ओर आकृष्ट होते हैं। इसमें उन सभी पहलुओं की ओर ध्यान दिया गया है जो आतंकवाद को रोकने में सहायक हो सकते हैं। साथ ही विचारधारा का आतंकवादियों के व्यवहार पर प्रभाव को समझाया गया है। रेंडी बोरम का उद्देश्य जहां एक ओर यह समझाना रहा कि कैसे यह संगठन पनपते हैं, काम करते हैं और अन्त में नष्ट हो जाते हैं, वहीं दूसरी ओर यह भी रहा कि इनके दुःख में हमें भागीदारी निभानी होगी ताकि इन्हें सुमार्ग पर लाया जा सके। इस पुस्तक में लेखक का प्रयास भावनात्मक लगाव पैदा करके लोगों को सद्जीवन की ओर उन्मुख करना है। भाषाशैली की दृष्टि से यह मार्मिकता का प्रतिनिधित्व करती है।

4. **टोरे बीजोरगो, रूट कॉजेज ऑफ टेर्ररिज्म ' मिथ्स रियलिटी एंड वेज, रूटलज प्रकाशन, 2005** – यह पुस्तक आतंकवाद की उत्पत्ति के प्रमुख कारणों, उन स्थितियों का वर्णन करती है जो इसे बढाने में सहायक है। इसमें प्रजातांत्रिक असंतुलन, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, आतंकवाद व मीडिया संबंधों, आतंकवाद के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक पहलुओं, फिलीस्तीन, मध्यपूर्व, लेटीन अमरीकी, यूरोप में क्रांतिकारी आतंकवाद के समाप्ति हेतठोस उपायों पर भी दृष्टिपात करती है। साथ ही राज्य प्रायोजित आतंकवाद पर विस्तार से चर्चा करती है। इसका उद्देश्य आतंकवाद की उत्पत्ति के सभी कारणों पर विचार विमर्श करना है। इसमें शैली व्यंग्यात्मक है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 5, May 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1105377|

आंतकवाद की समस्या के मुख्य कारण :

वर्तमान संदर्भों में देखा जाए तो ऐसे अनेक कारण है जो आतंकवाद जैसी समस्या को बढ़ावा देने में अहम् भूमिका निभाते है। यद्यपि आतंकवाद की समस्या से सम्बन्धित ऐसे विभिन्न कारण है जो इस समस्या के लिए उत्तरदाई होते है, परन्तु यदि महत्वपूर्ण कारकों के संदर्भ में देखे तो ऐसे कुछ विशेष कारण है जो इस वैश्विक समस्या के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदाई है, वस्तुतः आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित है–

- बन्दूक, मशीन गन, तोपें, एटम बोम, हाईड्रोजन बम, परमाणु हथियार, मिसाइल आदि का अधिक मात्रा में निर्माण होना.
- आबादी का तेजी से बढ़ना
- राजनैतिक, सामाजिक, अर्थव्यवस्था
- देश की व्यवस्था के प्रति असंतुष्ट
- शिक्षा की कमी
- गलत संगति

आतंकवाद के इसके अलावा बहुत से कारण हो सकते है। आतंकवादी के अंदर समाज, देश के प्रति विद्रोह, असंतोष होता है. भ्रष्टाचार, जातिवाद, आर्थिक विषमता, भाषा का मतभेद ये सब आतंकवाद के मूल तत्व है, इन्ही के बाद आतंकवाद पनपता है।

आतंकवाद के दुष्परिणाम :

आतंकवाद एक गैर कानूनी कार्य है, जिसका मकसद आम लोगों के अंदर हिंसा का डर पैदा करना है। आतंकवाद एक शब्द मात्र नहीं है, यह मानव जाति के लिए दुनिया का सबसे बड़ा खतरा है, जिसे मानव ने खुद निर्मित किया है। आतंकवाद का मुख्य उद्देश्य सामाजिक व राजनैतिक सिस्टम को आहात पहुचाना है। आतंकवादी घटनाए अत्यधिक विनाशकारी होती है, मानव के जन जीवन पर इन घटनाओ का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, यह घटनाएँ ना केवल मानव जीवन को क्षति पहुंचाती है अपितु राष्ट्रों की आर्थिक उन्नति को भी बड़े पैमाने पर प्रभावित करती है। यह घटनाएं कभी राजनैतिक द्वेष के कारण घटित होती है तो कभी अन्य विभिन्न

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 5, May 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1105377|

कारणों के कारण, परन्तु सदैव भुगतना आमजन को ही पड़ता है। वस्तुतः आतंकवादी घटनाओ के प्रमुख दुष्परिणामों को निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत विश्लेषित किया जा सकता है–

- आतंकवाद से लोगों में डर पैदा हो जाता है, वे अपने राज्य, देश में असुरक्षित महसूस करते है।
- आतंकवाद के सामने कई बार सरकार भी कमजोर दिखाई देती है, जिससे लोगों का सरकार पर से भरोसा उठते जा रहा है।
- आतंकवाद के चलते लाखों की सम्पति नष्ट हो जाती है, हजारों लाखों मासूमों की जान चली जाती है, जीव–जंतु भी मारे जाते है।
- मानवजाति का एक दुसरे से भरोसा उठ जाता है।
- एक आतंकवादी गतिविधि देखने के बाद दूसरा आतंकवादी भी पैदा होने लगता है।

निष्कर्ष :

वर्तमान समय में आतंकवाद की समस्या किसी एक राष्ट्र की ना होकर एक वैश्विक समस्या के रूप में सबके सामने है। आतंकवादी गतिविधियों के बढ़ने से विभिन्न राष्ट्रों के समक्ष संकट उत्पन्न हो गया है। प्राप्त आंकड़ो के आधार पर स्पष्ट होता है की आतंकवाद की समस्या के विभिन्न दुष्परिणाम होते है जिनके कारण राष्ट्र का आर्थिक विकास प्रभावित होता है। अतः समय रहते इस विश्वव्यापी समस्या के समाधान हेतु कठोर कानूनों का निर्माण किया जाना अति आवश्यक है।

References:

1. Duncan, Gillian; Schmid, Alex P. (2011): Bibliography of Terrorism. In: Alex P. Schmid (Ed.): Te Routledge Handbook of Terrorism Research. Abingdon: Routledge, 475-597
2. Schmid, Alex P. (2011): Glossary and Abbreviations of Terms and Concepts Relating to Terrorism and Counter-Terrorism. In: Alex P. Schmid (Ed.): Te Routledge Handbook of Terrorism Research. Abingdon: Routledge, 598-706.

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 5, May 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1105377|

3. Forest, James J. F. et al. (2006, September 11): Terrorism and Counterterrorism: An Annotated Bibliography. (Vol. 2).
4. Duncan, Gillian (2009, September): New Literature on Terrorism and Political Violence. Perspectives on Terrorism, 3(3), 50 - 54.
5. Andrusyszyn, Greta H. (2009, December): Terrorism: A Selected Bibliography.
6. Price, Eric (2010, July): Dissertations and Teses on (Counter-) Terrorism and Political Violence (1980-2010). Perspectives on Terrorism, 4 (3), 58-63.
7. Freedman, Benjamin (2010, November): Terrorism Research Centres: 100 Institutes, Programs and Organisations in the Field of Terrorism, Counter-Terrorism, Radicalisation and Asymmetric Warfare Studies. Perspectives on Terrorism, 4 (5), 48-56.
8. Jongman, Albert J. (Berto) (2011, March): Internet Websites and Links for (Counter-) Terrorism Research. Perspectives on Terrorism, 5 (1), 22-37.
9. Hofmann, David C. (2012, December): Review Essay: Twenty Important Journal Articles on Radicalisation to, and De-Radicalisation from, Terrorism. Perspectives on Terrorism, 6 (6), 104-113.
10. Hofmann, David C.; Schmid, Alex P. (2012, December): Selected Literature on (i) Radicalization and Recruitment, (ii) De-Radicalization and Dis-Engagement, and (iii) Counter-Radicalization and Countering Violent Extremism. Perspectives on Terrorism, 6(6), 114-143.
11. Price, Eric (2013, June): Literature on Refugee Situations (including Internally Displaced Persons) and Terrorism (incl. other Forms of Political Violence and Armed Confict). Perspectives on Terrorism, 7 (3), 99- 113.

Impact Factor: 8.118

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com